# Marshal of the Indian Air Force Arjan Singh DFC

Marshal of the Indian Air Force Arjan Singh DFC was commissioned in the Royal Air Force (RAF) on 23 December, 1939. He served as Chief of the Air Staff (CAS) from 1964 to 1969. He was awarded the Padma Vibhushan for his distinguished service in commanding the Indian Air Force (IAF) during the Indo-Pakistan War of 1965. He was the first IAF officer to be promoted to the rank of Air Chief Marshal in 1966. He was assigned various important diplomatic and constitutional appointments after he retired as the Air Chief in the year 1969. In 2002, he became the first and only officer of the Indian Air Force to be promoted to five-star rank as Marshal of the Air Force, equivalent to the army rank of Field Marshal.

Arjan Singh was born on 15 April, 1919 in Lyallpur, Punjab (now known as Faisalabad, Pakistan) in what was then undivided India, into a Sikh family. Arjan Singh was educated at Montgomery, British India (now in Pakistan). In 1938, at the age of 19, he was selected for the Empire Pilot Training Course at the RAF College, Cranwell. He was commissioned as a Pilot Officer in December, 1939.

His first posting on being commissioned involved flying Westland Wapiti biplanes in the North Western Frontier Province as a member of the No. 1 IAF Squadron. Arjan Singh flew against the tribal forces before he was transferred for a brief stint with the newly formed No. 2 IAF Squadron. Later he moved back to No. 1 Sqn. as a Flying Officer, when the Squadron was re-equipped with the Hawker Hurricane. In 1944, he was promoted to the rank of Squadron Leader and became the Commanding Officer of No.1 Squadron. He flew close support missions during the crucial Imphal Campaign and later assisted the advance of the Allied Forces to Rangoon, Burma. For his role in successfully leading the squadron during combat, Arjan Singh received the Distinguished Flying Cross in 1944. He was given command of the IAF Display flight, which flew Hawker Hurricanes after the war, which toured India giving demonstrations. On 15 August 1947, he was given the unique honour of leading the fly-past of more than a hundred IAF aircraft over the Red Fort in Delhi.

Immediately after independence, Arjan Singh took over the command of Air Force Station, Ambala, in the rank of Group Captain. In 1948, the late Marshal married Teji Singh. They were married for 63 years before Mrs. Singh passed away in April 2011. In 1949, after promotion to the rank of Air Commodore, Arjan Singh took over as the Air Officer Commanding of an Operational Command, which later came to be known as the Western Air Command. Arjan Singh had the distinction of having the longest tenure as AOC of Operational Command, from 1949-1952 and again from 1957-1961. Promoted to Air Vice Marshal, he was the AOC-in-C of Operational Command. Towards the end of 1962 war, he was appointed as the Deputy Chief of Air Staff and became the Vice Chief of Air Staff by 1963. On 01 Aug 1964, Arjan Singh took over as the Chief of Air Staff (CAS) in the rank of Air Marshal. Arjan Singh was the first Air Chief who kept his flying category till the CAS rank. Having flown over 60 different types of aircraft from pre-second World War era biplanes to the more contemporary Gnats & Vampires, he had also flown transports like the super constellation.

A testing time came in September 1965 when Pakistan launched Operation Grand Slam, in which an armored thrust targeted the vital town of Akhnur. He was summoned into Defense Minister's office with a request for air support. When asked how quickly the IAF will be ready for operations, he replied with his characteristic nonchalance, "in an hour". And true to his word, the Air Force struck the Pakistani offensive in an hour. He led the IAF through the war showing unparalleled leadership.

Arjan Singh was awarded the Padma Vibhushan for his leadership during the 1965 War and subsequently the rank of CAS was upgraded to that of Air Chief Marshal and he became the first Air Chief Marshal of the Indian Air Force.

In 1969, after his retirement, Air Chief Marshal Arjan Singh was appointed as the Indian Ambassador to Switzerland and Vatican serving concurrently. He was also appointed as the High Commissioner to Kenya from 1974 to 1977. Subsequently, he served as a member of the National Commission for Minorities in the Government of India from 1975 to 1981. He served as the Lt Governor of Delhi from December 1989 to December 1990. In recognition of his services, the Government of India conferred the rank of the Marshal of the Indian Air Force onto Arjan Singh in January, 2002 making him the first and the only 'Five Star' rank officer of the Indian Air Force. In 2016, Air Force Station, Panagarh was renamed as Air Force Station Arjan Singh in his honour.

Arjan Singh breathed his last on 16 September, 2017.

Arjan Singh was and remains a source of inspiration to generations of Indians. For his immense contribution to the country and IAF in particular, DoP is pleased to release a Commemorative Postage Stamp in honour of Marshal of the Indian Air Force Arjan Singh DFC during the 87th Anniversary celebrations of the Indian Air Force in October 2019.


**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| **Stamp/ FDC/ Brochure** | : | Ms. Gulistaan |
| **Cancellation Cachet** | : | Smt. Nenu Gupta |
| **Text** | : | Based on information received from the proponent |


भारतीय डाक विभाग

**Department of Posts India**

## मार्शल ऑफ द इंडियन एयर फोर्स अर्जन. सिंह डीएफसी

## MARSHAL OF THE INDIAN AIR FORCE ARJAN SINGH DFC

विवरणिका BROCHURE
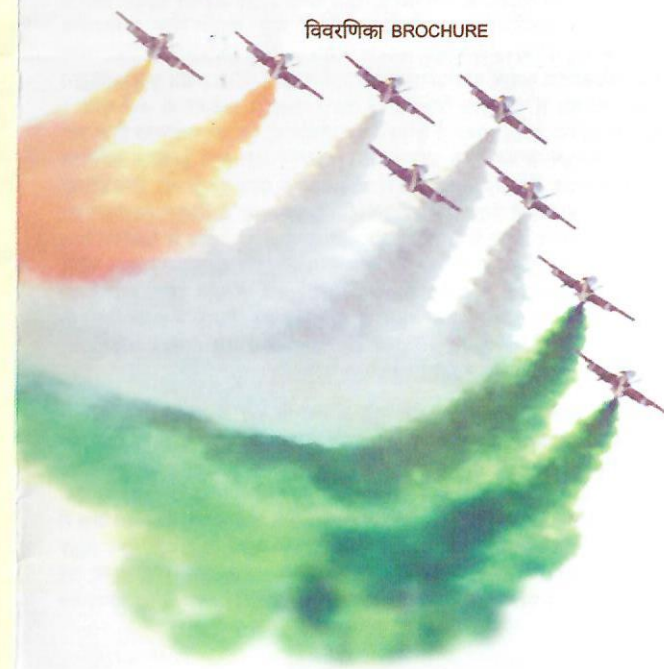
# मार्शल ऑफ द इंडियन एयर फोर्स अर्जन सिंह डीएफसी

मार्शल ऑफ द इंडियन एयर फोर्स अर्जन सिंह डीएफसी को 23 दिसम्बर, 1939 को रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) में कमीशन प्रदान किया गया। उन्होंने 1964 से 1969 तक वायु सेना अध्यक्ष के रूप में सेवा की। उन्हें 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय वायु सेना की कमान संभालने तथा उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया । वे 1966 में एयर चीफ मार्शल के पद पर पदोन्नत किए जाने वाले पहले भारतीय वायु सेना अधिकारी थे। वर्ष 1969 में वायु सेना अध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्हें विभिन्न महत्वपूर्ण राजनयिक और संवैधानिक पदों का दायित्व सौंपा गया। वर्ष 2002 में, ये सेना के फील्ड मार्शल रैंक के बराबर मार्शल ऑफ एयर फोर्स के रूप में पांच स्टार वाले रैंक में पदोन्नत किए जाने वाले भारतीय वायु सेना के पहले और एकमात्र अधिकारी बने।

अर्जन सिंह का जन्म तत्कालीन अविभाजित भारत में ल्यालपुर, पंजाब (जिसे अब फैसलाबाद, पाकिस्तान के नाम से जाना जाता है) में 15 अप्रैल, 1919 को एक सिख परिवार में हुआ था। अर्जन सिंह ने मॉन्टगोमरी, ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान में) शिक्षा प्राप्त की। 1938 में, 19 वर्ष की आयु में, उन्हें रॉयल एयर फोर्स कॉलेज, क्रैनवेल में एम्पायर पायलट ट्रेनिंग कोर्स के लिए चुना गया। उन्हें दिसम्बर, 1939 में पायलट ऑफिसर के रूप में कमीशन प्रदान किया गया।

कमीशन प्रदान किए जाने के बाद उनकी पहली तैनाती भारतीय वायु सेना के नं. 1 स्क्वॉड्रन के सदस्य के रूप में हुई, जहां उन्हें उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत में वेस्टलैंड वापिटी बाइप्लेन उड़ाने की जिम्मेदारी दी गई। अर्जन सिंह ने भारतीय वायु सेना के नए बने नं. 2 स्क्वॉड्रन में कुछ समय के लिए स्थानांतरित किए जाने से पहले जनजातीय समूहों के खिलाफ अभियान में काम किया। जब इस स्क्वॉड्रन को हॉकर हरिकेन से पुनः लैस किया गया तब वे फ्लाइंग अफसर के रूप में नं. 1 स्क्वॉड्रन में वापिस आए। 1944 में वे स्क्वॉड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत किए गए और नं. 1 स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर बने। उन्होंने महत्वपूर्ण इम्फाल अभियान के दौरान सहायक मिशन में उड़ान भरी और बाद में मित्र राष्ट्रों की सेनाओं को रंगून, बर्मा की ओर आगे बढ़ने में सहायता की। इस लड़ाई के दौरान स्क्वॉड्रन का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने में उनकी अहम भूमिका के लिए 1944 में उन्हें विशिष्ट फ्लाइंग क्रॉस प्राप्त हुआ। उन्हें भारतीय वायु सेना की प्रदर्शन उड़ान कमान सौंपी गई, जिसने युद्ध के बाद हॉकर हरिकेन में उड़ान भरी, जिसने समूचे भारत का दौरा किया और प्रदर्शन किए। उन्हें 15 अगस्त, 1947 को, दिल्ली में लाल किले के ऊपर सौ से अधिक आईएएफ वायुयानों की सलामी–उड़ान (फ्लाई पास्ट) का नेतृत्व करने का विशेष सम्मान दिया गया था।

उन्होंने स्वतंत्रता के तुरंत बाद, ग्रुप कैप्टन के पद पर वायु सेना स्टेशन अम्बाला की कमान संभाली। 1948 में तेजी सिंह से इनका विवाह हुआ। 63 वर्षों के सुखद वैवाहिक जीवन के उपरांत अप्रैल 2011 में श्रीमती तेजी सिंह का निधन हो गया। 1949 में एयर कमोडोर के पद पर पदोन्नति के बाद, अर्जन सिंह ने एक ऑपरेशनल कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग की कमान संभाली, जिसका बाद में पश्चिम वायु कमान नाम रखा गया। अर्जन सिंह को 1949 से 1952 और पुनः 1957 से 1961 तक ऑपरेशन कमांड की सबसे लम्बे समय तक कमान संभालने का गौरव प्राप्त हुआ। एयर वाइस मार्शल के पद पर पदोन्नति के बाद, उन्हें ऑपरेशन कमान का एयर ऑफिसर कमांडिंग–इन–चीफ बनाया गया। 1962 में युद्ध के आखिरी चरण में उन्हें उप वायुसेना अध्यक्ष नियुक्त किया गया था और 1963 तक वे सह वायु सेना अध्यक्ष बन गए। 01 अगस्त 1964 को अर्जन सिंह ने एयर मार्शल के रैंक में वायु सेना अध्यक्ष (सीएएस) का पदभार ग्रहण किया। अर्जन सिंह पहले ऐसे वायु सेना अध्यक्ष थे जिन्होंने वायु सेना अध्यक्ष के पद पर बने रहने तक अपनी उड़ान श्रेणी को बनाए रखा। द्वितीय विश्व युद्ध के पहले के समय के बाइप्लेन से लेकर अपेक्षाकृत अधिक समकालीन नैट और वैम्पायर वायुयानों तक 60 से अधिक अलग–अलग तरह के वायुयान उड़ाने के साथ–साथ उन्होंने सुपर कॉन्सटेलेशन जैसे परिवहन वायुयानों में भी उड़ान भरी।

सितम्बर, 1965 में उस समय परीक्षा की घड़ी सामने आ खड़ी हुई जब पाकिस्तान ने ऑपरेशन ग्रैंड स्लैम शुरु कर दिया, जिसमें महत्वपूर्ण नगर अखनूर को हथियारबंद हमले से निशाना बनाया गया, उन्हें हवाई सहायता के अनुरोध के लिए रक्षामंत्री के कार्यालय में बुलाया गया। यह पूछे जाने पर कि भारतीय वायुसेना ऑपरेशन के लिए तैयार होने में कितना समय लगाएगी, अपने चिर–परिचित बेफ़िक्री अंदाज में इनका जवाब था, 'एक घंटा' और उनके कहे अनुसार, वायुसेना ने एक घंटे में ही पाकिस्तानियों पर हमला बोल दिया। उन्होंने इस पूरे युद्ध में अभूतपूर्व नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए भारतीय वायु सेना की अगुवाई की।

अर्जन सिंह को 1965 के युद्ध के दौरान उनके नेतृत्व के लिए 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया और बाद में वायु सेना अध्यक्ष के रैंक को अपग्रेड करके एयर चीफ मार्शल कर दिया गया और वे भारतीय वायुसेना के पहले एयर चीफ मार्शल बने।

1969 में, उनकी सेवानिवृत्ति के बाद, एयर चीफ मार्शल अर्जन सिंह स्विट्जरलैंड और वैटिकन के राजदूत नियुक्त किए गए और उन्होंने ये दोनों जिम्मेदारी एक साथ निभाई। उन्हें 1974 से 1977 तक केन्या में उच्चायुक्त के पद पर भी नियुक्त किया गया। बाद में, उन्होंने 1975 से 1981 तक भारत सरकार के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग में एक सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने दिसम्बर, 1989 से दिसम्बर, 1990 तक दिल्ली के उप राज्यपाल के रूप में सेवाएं दीं। इनकी सेवाओं के सम्मान में, भारत सरकार ने जनवरी 2002 में अर्जन सिंह को मार्शल ऑफ द इंडियन एयर फोर्स का रैंक प्रदान किया गया और इस तरह से ये 'पांच स्टार' रैंक प्राप्त करने वाले भारतीय वायुसेना के पहले और इकलौते अधिकारी बने। वर्ष 2016 में, इनके सम्मान में वायुसेना स्टेशन, पानागढ़ का नाम बदलकर वायुसेना स्टेशन, अर्जन सिंह रखा गया।

16 सितम्बर, 2017 को अर्जन सिंह का निधन हो गया।

अर्जन सिंह भारतीयों की कई पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणास्रोत थे और हमेशा रहेंगे। डाक विभाग देश और विशेषकर भारतीय वायुसेना के लिए इनके असीम योगदान के लिए अक्तूबर, 2019 में भारतीय वायुसेना की 87वीं वर्षगांठ के अवसर पर मार्शल ऑफ द इंडियन एयर फोर्स अर्जन सिंह डीएफसी के सम्मान में एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।


**आभारः**

| | |
|---|---|
| **डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका** | : सुश्री गुलिस्ताँ |
| **विरूपण कैशे** | : श्रीमती नीनू गुप्ता |
| **पाठ** | : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना पर आधारित |


भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA


## तकनीकी आंकड़े
## TECHNICAL DATA

| | |
|---|---|
| मूल्यवर्ग | : 500 पैसे |
| Denomination | : 500 p |
| मुद्रित डाक–टिकटें | : 600039 |
| Stamps Printed | : 600039 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : Wet Offset |
| मुद्रक | : भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक |
| Printer | : India Security Press, Nashik |

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्यः ₹ 5.00